आंध्रप्रदेश की तलमज्जी मात्स्यिकी संपदाओं का स्तर

मधुमिता दास, के.नारायण राव, वी.अब्बुलू और जी.सैदा राव

**केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र,
पांडुरंगपुरम, विशाखपट्टणम, आंध्रप्रदेश**

आंध्रप्रदेश 974 कि.मी. की तट रेखा और 33,227 कि.मी^{2} का महाद्वीपीय शेल्फ होनेवाला राज्य है. देश के कुल समुद्री मछली अवतरण का 6.6% इस राज्य का योगदान है। देश की कुल तलमज्जी (demersal) मात्स्यिकी संपदाओं का 27.5% आंध्रा प्रदेश में है और यह कुल मात्स्यिकी पकड का 26.1% आकलित किया गया है। तलमज्जी पख मछलियों में लगभग 23 ग्रुप और 71 वाणिज्यिक प्रमुख मछली जातियाँ सम्मिलित हैं।

यान और संभार (crafts and gears)

स्वतंत्रता पूर्व काल में अयंत्रीकृत यानों और सूती जाल उपयुक्त करके मत्स्यन परिचालन किया जाता था। मत्स्यन यानों के मोटोरीकरण और यंत्रीकरण 1960 के वर्षों में शुरू हुआ और यह मछुआरे लोगों को गहरे समुद्र में मत्स्यन करने में सहायक निकला। इस प्रकार आंध्रप्रदेश में मत्स्यन परिचालन के लिए उपयुक्त किए जाने वाले परंपरागत कटामरनों, छोटी नावों, सिले हुए यानों तथा नावों को यंत्रीकृत आनायकों (trawlers) के रूप में परिवर्तित किया गया। तलमज्जी संपदाओं के विदोहन के लिए सबसे प्रभावकारी जाल है आनाय जाल (trawl net).

पिछले दशकों में अयंत्रीकृत और यंत्रीकृत दोनों बेडाओं (fleet) में तेज़ विस्तार हुआ। एकल दिवसीय मत्स्यन परिचालन वर्ष 1980 तक ही रहा। वर्ष 1980 में शीतकाल के दौरान दो दिनों से लेकर चार महीनों तक सीमित रात्रिकालीन मत्स्यन शुरू होकर वर्ष 1984 तक जारी रहा। आंध्रा प्रदेश में वर्ष 1987 में सोना बोटों के परिचालन के प्रारंभ से 3-10 दिनों का वोयेज मत्स्यन (voyage fishing) भी शुरू हुआ और इस से मछली अवतरण में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। वर्ष 1987-1990 के दौरान अक्तूबर-मार्च के महीनों में वोयेज मत्स्यन और बाकी महीनों में एकल दिवसीय मत्स्यन किया गया। वर्ष 1990 से लेकर अप्रैल, मई और जून महीनों को छोडकर बाकी 9 महीनों में वोयेज मत्स्यन का विस्तार किया गया और वर्ष 1995 से लेकर पूरे वर्ष में वोयेज मत्स्यन जारी रखा गया।

आंध्रप्रदेश के कारीगरी सेक्टर में उपयुक्त गिअरों में गिल जाल, ट्रामेल जाल, स्टेक जाल, तट संपाश (shore seine), बोट संपाश और कांटा डोर (hooks and lines) प्रमूख हैं और अधिक परिचालन की दृष्टि से गिल जाल की ज्यादा प्रमुखता है। लेकिन प्राकृतिक जाल सामग्रियों और रस्सियों के स्थान पर कृत्रिम जाल सामग्रियों और रस्सियों का प्रयोग होने लगा।

प्रमुख तलमज्जी प्रभव

भारत के तट के कुल 71 वाणिज्यिक प्रमुख प्रभवों (stocks) में, क्राकेर्स, गोटफिश, तुम्बिल (lizard fish), सूत्रपखब्रीम (threadfin bream), पाम्फ्रेट, मुल्लन (silverbellies), उपास्थिमीन (elasmobranchs) आंध्रा तट का योगदान है।

क्राकेर्स

सयनिड्स विशाखपट्टणम में छोअे यंत्रीकृत एककों द्वारा पकडी जानेवाली वाणिज्यिक प्रमुख तलमज्जी पख मछली संपदाओं में प्रमुख है। निबिया *माक्युलेटा, जोनियस कारूटा* और *पेत्राहिया माक्रोप्थालमस* सयनिड अवतरण की प्रमुख मछलियाँ हैं।

पाम्फ्रेट्स

पाम्फ्रेटों का, मुख्य रूप से अन्य देशों में निर्यात किया जाता है। *पाम्पस अर्जेन्टियस, पी. चाइनेन्सिस* और पेरास्ट्रोमटियस नैगर अवतरण की जानेवाली प्रमुख पाम्फ्रेट मछलियाँ हैं।

सूत्रपखब्रीम

नेमिप्टीरिड्स आंध्रा तट की प्रमुख तलमज्जी मात्स्यिकी संपदा है और सुरिमी के उत्पादन की दृष्टि से इसका और भी महत्व है। मुख्यत: सूत्रपखब्रीम मछली की पांच जातियाँ यानी *नेमिप्टीरस जापोनिकस, एन.मीसोप्रियोन, एन.टोलू, एन.लूटियस* और *एन.डेलगोए* पकडी जाती हैं, जिन में पहली दो जातियाँ मात्स्यिकी में प्रमुख योगदान करती हैं। *एन.जापोनिकस* की तुलना में *एन.मीसोप्रियोन* की पकड अधिक है लेकिन उनकी उपस्थिति मौसमिक है।

सूत्रपखब्रीम

गोटफिश

गोटफिश की चार जातियाँ प्रमुख हैं जिन में *यूपेनियस विट्टाटस* सब से प्रमुख है और *यू.सल्फ़ूरियस* और *यू.मोल्लुकान्सिस* की कम प्रमुखता होती है. *यू.ट्रागुला* की कम मात्रा में पकड होती है। कुल गोटफिश पकड का 60% *यू.विट्टाटस* का योगदान है।

गोटफिश

तुम्बिल

आंध्रप्रदेश की तुम्बिल मात्स्यिकी की रीढ़ *सॉरिडा* वंश की मछलयाँ हैं। सॉरिडा अंडोस्क्वामिस और *एस.तुम्बिल* इस मात्स्यिकी में 75% से अधिक योगदान करती हैं। अवतरण में अन्य प्रमुख मछलियाँ *एस.माइक्रोपेक्टोरालिस*, *एस.लोंजिमानस* और *ट्रकिनोसेफालस मयोप्स* हैं।

उपास्थिमीन और शिंगटी

उपास्थिमीनों में सुरा, स्केट्स और रे मछली शामिल हैं। सुराओं की मुख्य जातियाँ *कारकारियस मीलनोप्टीरस* और *सी. डुसुमेरी* हैं। रे मछली की प्रमुख जातियाँ *डासिटिस सुगेई* और *अक्टोमाइलाकस माक्युलेटस* हैं। शिंगटियों (catfishes) में एरियस थालासिनस, ए.टेन्युस्पिनिस और ए.*डुसुमेरी* प्रमुख हैं।

उपर्युक्त संपदाओं के अतिरिक्त *पोलिनेमस इंडिकस, पोमाडासिस* जातियाँ, *लाक्टारियस लाक्टारियस, प्रियाकांतस* जातियाँ, *साइनोग्लोसस माक्रोलेपिडोटस, सेटोडस एरुमेई* भी बाज़ार में बडी मांग होनेवाली मछलियाँ हैं.

उत्पादन प्रवणता और प्रबंधन

आंध्रप्रदेश राज्य का वार्षिक तलमज्जी मछली अवतरण वर्ष 2003 से 2007 के दौरान राज्य की कुल मछली पकड के 26.1% और 51131 टन के औसत वार्षिक उत्पादन के साथ 40949 टन से 57655 टन के बीच था। इस अवधि में वर्धित पकड का आकलन होने पर भी वर्ष 2003 और 2005 में थोडी कमी महसूस हुई। वर्ष 2006 में 57655 टन की उच्चतम पकड और वर्ष 2005 में 40949 टन की निम्नतम पकड आकलित की गयी। तलमज्जी मछलियों में सब से प्रमुख ग्रुप क्राकेर्स (18.9%) है और इसके बाद प्रमुखता पाम्फ्रेट (13.9%), उपास्थिमीन (13.9%), पेर्चस (9.6%), गोटफिश (9.1%), सूत्रपखब्रीम (6.0%) और तुम्बिल (4.0%) की होती है।

1980 के वर्षों में विभिन्न समुद्रवर्ती राज्यों द्वारा लागू किए गए समुद्री मत्स्यन नियमन अधिनियम (Marine Fishing Regulation Act) के अंदर आंध्रप्रदेश में हर वर्ष अंडजनक मछलियों का संरक्षण करने के उद्देश्य से अप्रैल 15 से मई 31 की अवधि में यंत्रीकृत पोतों (vessels) द्वारा किए जानेवाले मत्स्यन पर रोक लगाया जाता है और चालू वर्ष में जून 15 तक बढाकर दो महीने का रोक लगाया गया। लेकिन परंपरागत देशज यानों और मोटोरीकृत यानों द्वारा इस अवधि में मत्स्यन किया जाता है। इस वजह से अंडजनक मछलियों का व्यापक नाश होता है। इस से मछुआरों की समाज - आर्थिक स्थिति में भी परिवर्तन हुआ। अत: उत्तरदायित्वपूर्ण मत्स्यन को बढावा देने के लिए मछुआरों की समाज-आर्थिक कल्याण और मात्स्यिकी शक्यता टिकाऊ स्तर तक कायम रखना अनिवार्य है। बंद मत्स्यन मौसम का निर्धारण करने के लिए जीवविज्ञान आंकडों के आधार पर सांख्यिकी तरीके से मछलियों की प्रौढता और गर्भयुक्तता आकलित करने के संकेतकों का विकास किया जाना चाहिए।

मछुआरे लोगों और मात्स्यिकी से संबंधित गतिविधियों से जुडे हुए लोगों की आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मात्स्यिकी संपदाओं का टिकाऊ स्तर (sustainable level) पर विदोहन करना आवश्यक है ताकि पूरा आवास तंत्र का परिरक्षण भी हो जाएगा। आवास तंत्र पर आधारित मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए नियमित रूप से और सावधानी से मत्स्यन करना समय की आवश्यकता है।